MSS No. 214 Subject Religion

Name of MSS ज्ञान सर्वोदय

Author चरण दास

Period – – Folios 12

Script Hindi Source Prithipal Singh, Amritsar

Missing Folios 2-5

214

ACCESSION NO. 214

AUTHOR. CARANA DASA.

TITLE. JNANASVARODAYA.

स्वरो०
१ ॐस्वस्तिश्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्री चरणदासजी कृत ज्ञान
स्वरोदै लिख्यते ॥ नमो नमो सुखदेवजी प्रणाम करूं ध्रनन
। तुम प्रसाद स्वर भेद कूं चरनदास बरनन्न ॥१॥ पुरुषोत्तम पर
मात्मा पूरण विस्वे बीस ॥ आद पुरुष अवचल तुही ताहि नवाऊं सी
स ॥२॥ कुंडलीया छन्द ॥ अक्षर ॐ सं कहत है अक्षर सोहं जान ॥
निहअक्षर स्वांसा रहित ताहि कूं मन प्रान ॥ ताही कूं मन प्रान
तूं दिन सुरत लगावो ॥ आपा आप विचार औरनासी सब बिसराउ ।
चरनदास सम थकहितहैं अगम निगम की साख ॥ यही वचन ब्रह्म
ज्ञान का मानो विस्वे बीस ॥३॥ ॐ संकाया भई सोहं सो मन होय ।
निहअक्षर सो स्वासा भई चरनदास भल जोय ॥ चरनदास भल
जोय रैव चमनु वागतिह राखो ॥ अक्षर अक्षर निहअक्षर एक कै दुबधा स्व
१

पिरथीपानीसमोंजोवरैचंदद्रगस्थान॥दहनैसुरमैजोवहैसमे
समधामजान॥६०॥भोरहीजोसुरवमननचलैराजहेयउत्पात
॥देखनवारोविनसहै,श्रौरकालपरजात॥६१॥राजहेयउत्पात
पुनिपटैकालविसुवास॥भेहुन्तीपरजादुरवीजोहोयतत्वश्राक
स॥६२॥स्वांसामैपावकचलैपटैकालतबजान॥रोगहोयप
रजादुरवीघटैराजकोमान॥६३॥भैकलेशहेयदेसमैविग्रहकै
लैप्रत्त॥पटैकालपरजादुरवीचलैबायकेतत्व॥६४॥संक्रांतपूर
चैतकोदीनोभूलरसाय॥जगतकाजप्रबकहतहूंचंदसूरकोव्या
प॥६५॥चौपई॥बिवाहदानतीरथजोकरै॥वस्त्रभूषनघरपग
धरै॥बांधैसुरमैएसभकीजै॥पोथीपुस्तकजोलिरवलीजै॥जो
गअभ्यासप्रकरकीजैप्रीत॥श्रौसधकाटीकीजैमीत॥दोहा

स्वरो०
६ मंत्रबोवैहन्नाजु॥ चंदजोगथिरहुबैठेराज॥ चंदजोगमै,प्रसि
थिरहुजानै॥ थिरहुकाजसभहीपहचानौ॥ करैहवेलीहुपरहु
वै॥ बागबगीचाजुफ्रबनावै॥ हाकमजायकेमैबरै॥ चंद्र॥
जोगआसनपगउधरै॥ चरनदाससुखदेवबतावै॥ चंदजोगथि
रहुकाजकहावै॥ ६६॥ दोहरा॥ जावैसुरकेकाजएसोमैदीएबता
या॥ दहनेस्वरकेकहतहुंज्ञानस्वरोदैगाय॥ ६७॥ चौपई॥ जो
स्वांदुगकीरहीयेचाहै॥ राजकरवैरीऊपरबाहै॥ जधबादरण
जीतैसोई॥ दहनेसुरमैचलैकोई॥ भोजनकरैकरैप्रसनानु॥
मैथनकरमभांनपरधानु॥ वहीमहरसैकीजैब्याहरा॥ गज
घोटाबाहनहथीयारा॥ विद्यापढैनहीजोसाधै॥ मंत्रसिद्धध्या
नआराधै॥ वैरीभवनगहनजोकीजै॥ औरकाहुंकुंरिनकोदीजै॥ राम।
६

रिनकाहूं दैजोतूं मांगै॥ विषअमृतउतारन लागै॥ चरनदाससुखदेवविचारी॥
एचरकरम भांवनीनारी॥ ६८॥ दोहरा॥ चरकारजकूं भानुहै थिरकारजकूं चंद॥
सुखमन चलतन चालीयेलहां होयकुइद्वंद॥ ६९॥ गांवपरगनैखेतपुनि दूध
५ रऊपरमीत॥ सुखमन चलतन चालीयेबरजतहैरणजीत॥ ७०॥ रविन
बहांवैसविनदाहनैसोईसुखमनजांन॥ टीललगैकैचालिमिलैकैसारजकीहे
न॥ ७१॥ होयकलेसपीडाकहूजोकोईकहीजाय॥ सुखमन चलतन चालीये
पैदीनौलाहूबताय॥ ७२॥ जोगकरैसुखमन चलैकैपरात्मकेध्यान॥ और
काजुकोईकरैलैकंहुपावैहांन॥ ७३॥ पूर्वउत्तमतचलैबांएखरपरगास॥
हांनहोयबऊरैनहीआवननहीआस॥ ७४॥ दहनैचलतचालीयेदछनपश्चि
मजांन॥ जोरजावैपवऊरैनहीतहांकछुहान॥ ७५॥ दहनेसुरमैजाईयैपूर्व
वेउत्तरराज॥ सुखसंपतिआनदकरैसभीहोयसभुकाज॥ ७६॥ ०

स्वरो०
७

बाएस्वरमैजाईयेदक्षणपश्चिमदेस॥सुखआनंदमंगलकरैजोरजायपरदे
स॥७७॥दहनैसेतीआपकरिबांएंपूछैकोय॥जोबावोंसुरखंदहैसुफलका
जनहिहोय॥७८॥बांएंसेतीआपकरैदहिनैपूछैधाय॥जोदहनौसुरखंदहैका
रजअफलबताय॥७९॥जबसुरभीतरिकूंचलैकारजपूछैकोय॥पैजबांध
वांसूंकहैमनसाफलहोय॥८०॥जबसुरबाहरकूंचहैतबकोईपूछैतोर॥वां
कूंऐसेभाखीयैनहीकारजबिधकोर॥८१॥बांईकरवटसोईयेजलबांवेसु
रपीव॥दहिनेस्वरभोजनकरैतोसुपावेजीव॥८२॥बांएस्वरभोजनकरैद
हिनैपीवेनीर॥दसदिनभुलोयोंकरैपावैरोगशरीर॥८३॥दहिनेस्वरफ़ि
रैबांहैलघुशंकाय॥जगताऐसेसाधीयैदीनोभेदबताय॥८४॥
चंदचलावैयोसकूंरातचलावैसूर॥नितसाधनऐसोकरैहोयअमरभरपू
र॥८५॥जितनौगहिवायोचलैसोईदहनोहोय॥दससस्थांसासुरखमनचलैतागि

राम
७

गैचारोलोय॥८६॥प्राठ पहिर दश्हिनो चलै बदलै नहिं जु पौन॥ तीन बरस को थाय है जो करै फिर गौन॥८७॥ सोलहि पहिर चलै जबी स्वांस [illegible] पिंगुला माहि॥ जुगल बरस का ग्रारहै पाछै रहिनां नांहि॥८८॥ तीन रात प्रूरू तीन दिन बहै दाहनी स्वास॥ संबत भरका यार है पाछै फिर होय नास॥८९॥ सोलहि दिन निसदिन चलै स्वांस भान की डोर॥ प्रायू जो नइक मास की जीव जायत न होर॥९०॥ नौ भृकुटी सपते स्रवन पांच तारका जांन॥ तीन बाकं जिह भ्याइ कै काल भेद यहि चांन॥९१॥ भेदु गुरू से पाइये गुरु बिनु लहै न जान॥ चरनदास यो कहत है न गुरु पूर [illegible] ग्यान॥९२॥ एक मास जो रैनि दिन भानदा हिनै होय॥ चरनदास यौ कहत है नर जी वै दिन दोय॥९३॥ नाडी जो सुखमन चलै पांच घडी ठहिराय॥ पांच घडी सुखमन बहै तब ही नर मर जाय॥९४॥ नहि चंद नहि सूर है नहि सुखमना बास॥ मुख से तीस्वासा चलै घडी चार मैं काल॥९५॥ चा

रहि दिनां कै प्राहु दिन बारह कै दिन बीस ॥ ऐसे जो चंद चलै प्राण पूजांनबद
ईस ॥ ९६ ॥ तीन रात पूरे तीन दिन चालै तत पूरक्कास ॥ एक बरस काया
रहै फेर काल ग्रिसवास ॥ ९७ ॥ दिन कूं तो चंद चलै चलै एतकै सूर ॥ यहि
निश्चै करि जानीयौ प्रान गवन बहु दूर ॥ ९८ ॥ एति चलै सूर चंद मैं दिन कूं सूर्य
बाल ॥ एक महीना यो चलै हुदै महीने काल ॥ ९९ ॥ जब साधू पै सीतल रैहै छै म
हीने काल ॥ पूंगे ही साधन करै बैठ गुफा तल काल ॥ १०० ॥ ऊपर रवै च पवन कूं पूर्न
प्रपान मिलाय ॥ उत्तम करै समाधि कूं ताकूं काल न खाय ॥ १०१ ॥ पवन पिवै ज्वाला प
चै अभित है कौराह ॥ मेरुदंड कूं फेरकै बैसै ब्रम्हपुर जाय ॥ १०२ ॥ जहं काल पऊ
चै नहि जम की [illegible] होय पवन अभ्यास ॥ गगन मंडल कूं जाय करि करै उनमुनी बास ॥ १०३ ॥
कबै जहां काल नहि ज्वाला है दुटै सकल संताप ॥ होय उनमुनी लीन मन बिसरै आपा आप ॥
१०४ ॥ तीनो बंध लगाय करि पांच बाइ कूं साध ॥ सुरत मन मारग है चलै देखै रवेल पुगा

धा॥१०४॥शग्निजायमिलबस्येगमिलैजहांहोयमनलीन॥महंकरयेचरीजोग
जैजानैजांनप्रबीन॥१०६॥ग्रासनपदमलगायकरैमूलबंधकूंबांध॥मेर
डुंडसीधाकरैसुरतिगगनकूंसाध॥१०७॥चंदसूरदोउसमकरैठोडीहिरदैलगा
य॥खटचक्रकूंभेदकरैसुनिसिखरकूंजाय॥१०८॥इडापिंगलासाधकरै
सुखमनमैकरैबास॥परमजोतमैजातमिलतहांपूजैमनकीआस॥१०९॥गि
नसाधनप्रानीकरीतांसूंसबकिछुहोय॥जबचाहैजबहीतजैकालबचावैसो
य॥११०॥तरुनअवस्थाजोगकरिबैठरहैमनजीत॥कालबचावैसाधवृद्धत
समैरनजीत॥१११॥सदाग्रापमैलीनरहैकरैजोगअभ्यास॥ग्रावतदेखै
कालजबगगनमंडलकरैवास॥११२॥सनैसनैसाधनकरैराखैप्रानचढाय॥
क + पूरेजोगीजानीयैतांकूंलनरवाय॥११३॥पहिलैसाधननाकीयोगगनमंडल
केजान॥ग्रावतजानैकालजबकहांकरैअग्यान॥११४॥जोगध्यानकीयोनमेह

ज्वान्नध्रुवस्याम्मीत॥ प्रागाम हैं रवै कं ला कोकहं सकै चहजीत॥११५॥ कास
जीतहगैरसंतम्मिसैसुंनिमहिलध्रुस्यांन॥ प्रागैजिनसाधनकरीतस्त ध्रुव
स्याजान॥११६॥ कालध्रुवधीवीतैतबीजबैबीतसमजाय॥ जोगीप्रानउ
तारीयैतेहुसमाध्यजगाय॥११७॥ कालजीतजगमैरहैमोतनब्यापैतांह॥
इसैद्वारखूंटेरकरजबचाहैतबजाय॥११८॥ सूर्यमंडलचीरकैजोजीत्यागैप्रा
न॥ साजुजमुक्तिसोईलहैपावैपदनिर्बांन॥११९॥ कूरमपाह्निकेमध्यमैर
हतहेपजुमांन॥ जीवपूनहीहुईयैराजाहोयफिरप्रान॥१२०॥ राजपायह
रिभक्तिकरिपूर्बलीपहचांन॥ जोराजगतिपावैबहुरैभरमुक्तिमैदांन॥१२१॥
उत्तरायनसूर्यलखैध्रुवकपाह्निकेमाहि॥ जोजीकायात्यागीयैयामैसंसेना
हि॥१२२॥ मुक्तिहेयबहुरैनगहजीवचोजगमैरजाय॥ बूंदसमुंद्रमिलरहैदुते
यानाठहराय॥१२३॥ दक्षनायनसूर्यरहैरहैमासखटजांन॥ फिरउत्तरा

पनजापकररहै मम्सरवटभानु ॥१२४॥ दोनोसुरकंसद्धकरस्वांसासामैमनु
राख ॥ भेदस्वरोहैपापकरैतबकंहूंसंभाख ॥१२५॥ जोरनऊपरजाईयैद
हनैसुरपूसासु ॥ जीतहोयपहारैनहीकरैशत्रुकेनास ॥१२६॥ दुरजनकोसु
सुरदाहिनोलेदहिनोहोय ॥ जोकोईपगहलेचढैखेतजीतहैसोय ॥१२७॥ सुख
मनचलतनचालीयैयुद्धकरनसुनमीत ॥ शीसकटावैकैदुसैदुर्जनकीहोयपक
जीत ॥१२८॥ जोवावैंपृथ्वीचलैचढमावैकोईभूपा ॥ प्रापवैठदलपेलीयैवात
कहूतहूंसप ॥१२९॥ जलपृथ्वीघरमैचलैसुनेकोनदैवीर ॥ सपफलका
जदोनोकरैकैधरतीकैनीर ॥१३०॥ पावकप्रस्तकासततबायतत्वजोहोय ॥
कटुकाजुनहीकीजियैइनमैवरजतोय ॥१३१॥ दहनोसुरजबचलतहैकहीं
जैयजेकेय ॥ तीनपावधागेधरैसूर्य्यकेदिनहोय ॥१३२॥ बांवेसुरमैजाईयै
बांएंपगधरचावर ॥ बांबीउगपहलैधरैहोयचंदकेवार ॥१३३॥ दहनैसुर

मैजाईयै दहनीउधरतीन॥ बांवै सुरमै चारउजबांवीकरि परवीन॥१३४॥ स
र भवली के गर्भ की जो कोई पूछै प्राय॥ बालक हेय कि बालकी जो वै कै मर जा
य॥१३५॥ पीछा बालक होन की जो कोई पूछै लाय॥ बांए कहीयै छुकरी दहनै बे
टा होय॥१३६॥ दहनै सुर के चलत ही जो वहि पूछै प्राय॥ बांके बांवौ सुर चलै
बालक होय मर जाय॥१३७॥ दहनै सुर के चलत हीं जो वै पूछै बैन॥ वाहूं के
दहनौ चलै लर्का होय सुख चैन॥१३८॥ बांए सुर के चलत ही प्राय कहै जो कोय॥
बेटी होय जीवै नहीं वांको दहिनौ होय॥१३९॥ बांए सुर के चलत ही जो वहि पू
छै बात॥ वाहूं को बांवो चलै बेरी होय कुसलात॥१४०॥ तत्व प्रकास के चलत
ही कहै गर्भ की प्राय॥ होय नपुंसक कही जहां कै सतमासो जाय॥१४१॥ सैन
वरी ह्वां गर्भ की जो कोई पूछै प्राय॥ प्रग्नि होय जो तास मै उ छुही गिर जाय॥
१४२॥ सुरा बांवै सुर दाहिनैं दो सुर सुरव मन होय॥ पूछन वारे सौं कहै काल

जो

कउपजैंदेय॥१४३॥वायतत्वकेचलतहीजोकोईपूछैप्राय॥छुयवयाहेपवा
दैनहियेपेटहीमांगहेविलाय॥१४४॥कोईपूछैप्रायकरीयांकूंगर्भकेनांहि॥
दहुनैवांवैस्वरत्तरवैसाधस्वासकेमांहि॥१४५॥वंदउंरप्रायकरीहै
पूछैजोकेय॥वंदउंरतेगर्भहैवहतेस्वरनहीहेय॥१४६॥इडापिंग
लासुखमनानाडीकहीएतीन॥सूर्य्यचंद्रवचारकैरहैस्वाससौंलीन॥
१४७॥जैसेकछुसमटकरैप्रापहीमांहिसमाय॥ऐसैज्ञानीस्वासमै
रहैसुरतलौलाय॥१४८॥स्वांसबारावैकौदकीप्रावजांननरहोय॥
बीतजायस्वासासभैतबहीमृतकहेय॥१४९॥इक्कीसहजारछैसैचलै
रातदिनाजोस्वास॥वीसासौजीवैबरसहेयपत्रघुनकेनास॥१५०॥
प्रकासमृतकोईमरैहेयकरैभुजैंमृत॥स्वासजहांबीतेसभीजबप्रावै
जमदूत॥१५१॥चारोसंजमसाधकरैस्वासाजुगतचलाय॥प्राकासा

मित्र आवै नहि जीवै पूरी आव ॥१५२॥ उत्तम भोजन की जीयै रहि ये नाच
ढ सोय ॥ जल पै ठोसे पी जीयै बहुत बोहम तुरवाय ॥१५३॥ कुंडली पा
ढं द ॥ मोरव मुक्ति तम च हल है तजे कामना काम ॥ मन की इच्छा मेटक
रि भजो निरंजन नाम म[illegible] ॥ भजो निरंजन तत्व देह प्रध्यास मिटावे
। पंच न के तज स्वाद आप मै आप समावै ॥ जब टूटै झूठी देह जैसै रही
पा ॥ चरनदास यह मुक्ति गुरु नै हम सूं कहीया ॥१५४॥ दोहरा ॥ देह
मरै तत्र है अमर पारब्रह्म है सोय ॥ अज्ञानी भटकत फिरै ज्ञानी वै सुज्ञानी
होय ॥१५५॥ देह नहीं तत्व ब्रह्म है अबनासी निर्बान ॥ निन्न्यारो तुं देह सूं
देह कर्म सम जान ॥१५६॥ डोलन बोलन सोहनो भद्द राग करन प्रहार ॥
दुख सुख मैथुन रोग सम भज मीं शीत निहार ॥१५७॥ जाति वरन कुल देह
की सारत मसारत नाव ॥ उपजै बिनसै देह सो पंचतत्व के गांव ॥१५८॥

कावक पानी बाय है धरती औरइ प्रकास॥ पंचतत्व के के टमै आयकी यो तै
कास॥१५८॥ पांच पचीसो देह सं गगन तीनो है साथ॥ घटउ पा प
सो जानीयै करतार है उस्पात॥१६०॥ जिह्वा गइंद्री नीयकी न भकी इंद्री
कंन॥ नासा इंद्री घरन की कर विचार पहचांन॥१६१॥ लैचा सइंद्री बा
यकी पावक इंद्री नैन॥ इन कूं साधै साध जो पद पावै सुख चैन॥१६२॥
निद्रा सं गम प्रालक सभ्र ख पियास जो होय॥ चरन दास पंचो कही प्र
त्न तत्व स जोय॥१६३॥ करत गबिं द कफ तीसरे मे द सू व कूं जांन॥ चरन
दास प्रकृती पानी सं पहचान॥१६४॥ चांम हाड नो टी क हू रोम जांन प्र
रमास॥ पिरथी की प्रकृती पृंत समन को नास॥१६५॥ बलु करनां प्र
पावनां ऊठनां औरसं कोच॥ देह बढै सो जानीयै बायतत्व है सोच॥१६६॥
कांम क्रोध मोह लोभ भै तत्व कै प्रकास के भाग॥ नभ की पंचो जानी

यैसैतनविचारेतंजानजा॥१६७॥पांचपचीसौएकहीइनकेसकलसुभा
व॥निरविकारतंवूझलहैआपआपकूंपाव॥१६८॥निराकारनिरहीपत
तदेहीजांनप्रकुर॥आपनदेहीमानमतयहीज्ञानतत्वसार॥१६९॥
शस्त्रछेदैनसकैनहीपावकसकैनजार॥मरैनमिटैसोतत्वनहीगुर
गमभेदनिहार॥१७०॥जसौकहैकापापहीहैविनैनमिटैनिरहीय॥
जीवब्रह्मनौसीनित्यहैजांनैविरलौकोय॥१७१॥पांखनाकजी
भकहंतुचाजांनब्रह्मकंन॥पंचोइन्द्रीज्ञानहैजानैसंतसुजांन॥१७२॥
दुहाम्लिंगमुखतीसरोहस्तपायपलखहे॥पांचोइन्द्रीकरमहैया
कहींयैदेह॥१७३॥पृथ्वीकालजोठैरहैसुरवैज्ञानीपैहार॥नीरोरंगप
हिचानीयैपीवनेरंगनप्रहार॥१७४॥पितैमैपावकरहैनैनीज्ञानी
पैहार॥लालरंगहैपुरगीनकेमोउसोंअप्रहार॥१७५॥जलकाकहा

भालहैरंगजौजानीयैहुसार ॥ मैथुनकर्मअहारहैधौलोरंगजनिहार ॥ १७६ ॥
पवननाभमैरहितहैनासाजानोहुसार ॥ हरयोरंगहैवायकेगंधसुगं
धअहार ॥ १७७ ॥ आकासशीसमैबासहैअबवरणहुरेजान ॥ शब्दकूंशब्द
अहारहैतांकूंश्यामपहुचान ॥ १७८ ॥ कारनसूक्ष्मलिंगहैअरुकहीयेतअ
स्थूल ॥ शरीरतीनसोजानीयेमैमेरीजटमूल ॥ १७९ ॥ चित्तबुधम
नअहंकारजोअंतसकरणसुचार ॥ ज्ञानअगनिसूजारीयेकरकेमीतवि
चार ॥ १८० ॥ शब्दसपर्शअरुगंधहैअौरकहीयतरसरूप ॥ देहकर्मत
नमातरांलेंकहीयतनिहरूप ॥ १८१ ॥ निराकारअहैअचलनिर्वासीतं
जीव ॥ निरालंबगनवैरसोअजअबनासीसीव ॥ १८२ ॥ बांवेकोंठअ
गनिकोदहनेजलपगोस ॥ मनहदअस्थानहैपवननाभमैबास ॥ १
८३ ॥ मूलाकवहदलचारकेलालपेरंगरीरंग ॥ जोरीस्तुतवासोकीया

स्वरो०
१३

हैसेजापपयरंग॥१८४॥कवलखटदलपीयरेवरनजुभीतरहैसंभाला॥ख
टसहस्रजापजपहैब्रह्मासाविञीनाह्न॥१८५॥दसपैखरीकवलहै
नीलवरनसोनाम॥विस्नलछमीबासकीनौखटसहस्रजाप॥१८६॥
,ब्रनाहदचक्रहृदेरहैद्वादशदलप्रकासेत॥खटसहस्त्रजापजपहेगसिउस
कतजहंहेत॥१८७॥खोडसदलकेकवलहैकंठबासशशिरूप॥जा
पसहस्रजहांजपैभेदभलैप्रगतिरूप॥१८८॥अग्निचक्रदोदलकवलत्रि
कुटीधामप्रभुरूप॥जापसहस्रजहांजपैपवैजोतस्वरूप॥१८९॥दल
हजारकोकवलहैगगनमंडलमैबास॥जापसहस्रजहांजपैतेजपुं
जप्रगास॥१९०॥जोगजुक्तियहकरीसोयोजसलेसुरतिमिनदरीकवरिचीन॥द
सप्रकारधुनहदबजैहेपजहांलौलीन॥१९१॥कुंडलीयाछंद॥एकअ
वरगुंजारसोदूजैघुंघरूहोय॥तीजैशब्दजुशंखका चौथैघंटाहोय॥ राम
१३

चौथैघंटासोपंचवैतालजबाजै॥छठैसमुद्रलीलादरसतिवैभेरजगाजै॥
आठवैंसुबदम्रदंगकान्हादनफीरीनै॥दसवैंगर्जैनगसिंघसाचरनदास
सुनलै॥१९२॥दोहरा॥दसप्रकारप्रानहदघुरैजितजोगीहोयलीन॥
इन्द्रीयकमनरूवंथकैचरनदासकहदीन॥१९३॥तीनबंधनौनारिक
दसवाईकूंजान॥प्रानअपानसमानहैउदानकहीयत[illegible]ध्यान॥
१९४॥व्यानबायसकलरूकिरकलाकूंमैंबाईजीत॥नागधनजैदेवदत्त
दसवाईरगजीत॥१९५॥प्रानबोहारकूंबंधकगैरउनमनाहितीन॥उइ
पिंगलासुखमनाकेलकरैपरबीन॥१९६॥करनैंप्रानायामकेतिर
मलतलप्रनेक॥प्रानहदधुनकेबीचमैंदेखैंशब्दअनेक॥१९७॥पूर
ककरकुंभककररैचकपवनउतार॥ऐसैंप्रानायामकरसूक्ष्मकरै+प
प्रहार॥१९८॥धरतीबंधलगायकैंदसोबारकूंरोक॥मसाकप्रा

नचढाय कै करै भ्रमर पुर भोजा॥१९९॥ पांचो मुद्रा साधकर खावेध
टको भेद॥ नाडी शक्ति चढाईयै खट चक्र कूं छेद॥२००॥ जो मजतकै
कीजीयै कै पूजपा कै ध्यान॥ पापापाप विचारीयै परमतत्व के ग्यान॥
२०१॥ स्रद्भ वेश शरीर है ब्रह्म स्वरूप रजपूत॥ बूढ बाल तरूण है चर
न दास प्रेपधूत॥२०२॥ काया माया जानीयै जीव ब्रह्म है मित॥ का
या छुट स्वरत मिरै तं परमातम नित॥२०३॥ पाप पुन्य प्रकाशत
तजौन जो मानत प्रसथापा॥ काया मे है विकार तजि जपै स्व ध्रुजपाजा
प॥२०४॥ पाप भुलानै पाप मै बंध्यो पाप पहि पापा॥ जाके दृढत
गफिरत है सो तप पापी पापा॥२०५॥ इच्छा दूर विसार करि कोन होयनर
बास॥ तो जीवन मुक्ति है तजो मुग्ति की आस॥२०६॥ पवन भई
प्रकाश स्व अग्नि वाय सं हेय॥ पावक स्वरू पानी भयो पानी धरती सोय॥

२०७॥ धरतीमीठेस्वादहैखारीस्वादसुनीर॥ पुग्निचरपरेस्वादहैखा
टेस्वादसमीर॥२०८॥ स्वाढमीठास्वादहैचरपरारवारीपरमनहेय॥
जबहीतत्वविचारिहेपांचतत्वमेकोय॥२०९॥ स्वादन्नावप्रगरूरंगहैपु
रूबताईवाह॥ पांचतत्वकीपरखयहीसाधपावेतत्वकाह॥२१०॥ गतिरके
नीपावकचलैधरतीतोचौकार॥ संनसुभावप्रकासकेपानीहांवे
गेरहा॥२११॥ प्रग्नितत्वजनतांमसीकहीरजोगेनभा[illegible]मपृथ्वीनीरसते
गुनीनमहै॥ प्रस्थिरभाउ॥२१२॥ नीरचलैजबस्वा[illegible]मेंपाउपरचटमीत॥
बैरीकेमसिरकाटकरघरआवैरणजीत॥२१३॥ पृथ्वीकेपरगासमेंकठ
जांवोय॥ दोदलरहैबराबरीहारजायमेहोय॥२१४॥ प्रग्नितत्वकेवहत
हीजढुकरनमतजावा॥ हारहोयजीतैनहीप्ररूआवैतनघाव॥२१५॥ त
त्वप्रकासमेंजोचलैतोवोहीरहैजाय॥ रनमाहीकंपांदुरै घरनहीदे

देखैप्राण॥२१६॥जलपृथ्वीकेजोगमैगर्भरहैसोपूत॥वायतत्वमैह्वैकरी
व रस्तकस्त॥२१७॥पृथ्वीतत्वमैगर्भजोबालकहोवैभूप॥ध्यान
वंतासोईजांनीयैसुंदरसोईसरूप॥२१८॥अग्नितत्वजबचलतहै
कभीगर्भरहैजाय॥गर्भगीरैमातादुखीकैमातामरजाय॥२१९॥वा
यतत्वसरदहनैकरैपुरुषजबभोग॥गर्भरहैजोतासमैदेहीपावैरो
ग॥२२०॥आसनसंजमसाधकरिदृष्टस्वासकेमाहि॥तत्वभेदयोपाई
यैबिनुसाधेकुछनाहि॥२२१॥आसनपदमलगायकैएकबरसनित
साध॥बैठैलेटैऊठतैस्वासाहीआराध॥२२२॥नाभनासिकामांहिकरी
सोहंसोहंजाप॥सोईअजपाजापहैहूवैपुनिआपरूप॥२२३॥भेदस्वरोदै
बहुतहैसलकहियोबनाय॥ताकूंहमकछुविचारकैअपनैग्रंथेमन
लाय॥२२४॥धारनरटैगीवरटरैधूवटरैपुनिमीत॥वचनस्वरोदैना